

جون ۲۰۰۷ء

ماہنامہ شعاع کائنات

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى
فَدَجَاءَهُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
یہ نیک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लाखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष-2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 12

माह जून - 2006 लखनऊ
नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
“लखनऊ”

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक

हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड

प्रोफ़ेसर सै. हुसैन कमालुद्दीन अकबर, मु0 र0 आबिद,
सैय्यद समीउल हसन वसीम, शबीब अकबर नक़वी

वार्षिक - 200 रु

मिलने का पता

कीमत - 20 रु

नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जायसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न०	मज़मून	लेखक	पेज न०
1-	इमामे सज्जाद (अ०) की ज़िन्दगी का एक मजमुअी ख़ाका		
	आयतुल्लाहिलउज़मा सैय्यद सैय्यद अली ख़ामेना-ई मददाज़िल्लहुशरीफ		3
2-	इत्तेहादे इस्लामी		
	काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला		7
3-	माँ-बाप के हुक्क औलाद पर और औलाद से मुताल्लिक माँ-बाप की ज़िम्मेदारियाँ		
	इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला		9
4-	घर और समाज में खुदा का डर		
	हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान		12
5-	अक़वाले इमामे जैनुलआबिदीन		14
6-	मुख्य समाचार		
	इदारा		15

इलतिमासे फ़ातिहा ख़ानी

क़ारेईने किराम से गुज़ारिश है कि एक बार सूर-ए-फ़ातिहा और तीन बार सूर-ए-तौहीद की तिलावत फ़रमा कर मरहूमा मुस्लिम बानो बिनते मुहम्मद तक़ी ख़ाँ को ईसाल फ़रमाएँ।

- मुलतमिसीन:-
- | | |
|----------------------------|-------------------------|
| 1. मुज़फ़्फ़र अब्बास ज़ैदी | 2. मुहम्मद अब्बास ज़ैदी |
| 3. हामिद अब्बास ज़ैदी | 4. ज़ामिन अब्बास ज़ैदी |
| 5. सगीर अब्बास ज़ैदी | 6. ज़हीर अब्बास ज़ैदी |

ग्राम व पोस्ट भाई, ज़िला सुलतानपुर उत्तर प्रदेश

इमामे सज्जाद (अ0) की ज़िन्दगी

का एक मजमुअी खाका

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद अली ख़ामेना-ई मददाज़िल्लहुश्शरीफ

इमामे ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने 61 हिजरी में आशूरा के दिन इमामत की अज़ीम जिम्मेदारियाँ अपने कांधों पर सम्भालीं और 94 हिजरी में आपको ज़हर से शहीद कर दिया गया। इस पूरे अरसे में आप (अ0) इसी मक़सद को पूरा करने के लिए लगे रहे अब आप मज़क़ूरानुक्त-ए-निगाह की रौशनी में हज़रत की ज़िन्दगी के हिस्सों का जाएज़ा लीजिये कि आप इस ज़ेल में किन मरहलों से गुज़रते रहे, क्या तरीक़े अपनाए और फिर किस हद तक कामियाबियाँ हासिल हुईं।

वह तमाम इरशादात जो आपके ज़हने मुबारक से जारी हुए। वह काम जो आपने अन्जाम दिये वह दुआएँ जो लबे मुबारक तक आईं, वह मुनाजातें और राज़ व नियाज़ की बातें जो आज सहीफ़-ए-कामिल की शक़ल में मौजूद हैं उन सब की इमाम (अ0) के इसी बुनियादी मौक़िफ़ की रौशनी में तफ़सीर व ताबीर की जानी चाहिए चुनानचे इस पूरे दौर इमामत में मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर हज़रत (अ0) के मौक़िफ़ और फ़ैसलों को भी इसी उनवान से देखना चाहिए। मिसाल के तौर पर:-

1- कैद के दौरान। कूफ़ा में उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद और शाम में यज़ीद पलीद के मुक़ाबले में आपका मौक़िफ़ जो बहादुरी व फ़िदाकारी से भरा हुआ था।

2- मसरफ़ बिन उक़बा के मुक़ाबले में। जिसको यज़ीद ने अपनी हुकूमत के तीसरे साल मदीन-ए-रसूल (स0) की तबाही और मुसलमानों के माल की बर्बादी पर लगाया था, इमाम (अ0)

को मौक़िफ़ बहुत ही नर्म था।

3- अब्दुल मलिक बिन मरवान जिसको बनीउमैय्या में बहुत ही ताक़तवर और सबसे चालाक ख़लीफ़ा शुमार किया जाता था, उसके मुक़ाबले में इमाम का मौक़िफ़ कभी तो बहुत ही नर्म नज़र आता है।

इसी तरह-

4- उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के साथ आपका बर्ताव।

5- अपने साथियों और रफ़ीक़ों के साथ आपका सुलूक और दोस्ताना नसीहतें और

6- ज़ालिम व जाबिर हुकूमत और उसके अमले से जुड़े हुए दरबारी उलमा के साथ इमाम (अ0) का रवैय्या।

इन तमाम मौक़िफ़ों और इक़दामात का बड़ी गहरी नज़र के साथ मुताला करने की ज़रूरत है। मैं तो इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अगर इस बुनियादी मौक़िफ़ को नज़र के सामने रखते हुए तमाम जुज़ियात व हवादिस का जाएज़ा लिया जाए तो बड़ी ही माने ख़ेज हकीक़तें सामने आएँगी। चुनानचे अगर इस ज़ाविये से इमाम(अ0) की पाक ज़िन्दगी का मुताला करें तो यह अज़ीम हरती एक ऐसा इन्सान नज़र आएगी जो इस ज़मीन पर खुदावन्द वहदहू ला शरीक की हुकूमत काएम करने और इस्लाम को उसकी असल शक़ल में नाफ़िज़ करने को ही अपना मुक़द्दस

मकसद समझते हुए अपनी सारी की सारी कोशिश व मेहनत सबके सामने लाता रहा है और जिसने पुख्ता तरीन और कारआमद तरीन काम को पहचान कर न सिर्फ यह कि इस्लामी काफ़ले को उस गंदगी और परेशान हाली से निजात दिलायी है जो वाक़ेआ-ए-आशूरा के बाद दुनियाए इस्लाम पर मुसल्लत हो चुकी थी बल्कि देखने लायक हद तक इसको आगे भी बढ़ाया है। दो अहम और बुनियादी फ़रीजे जो हमारे तमाम इमामों को सौंपे गए थे। उनको इमामे सज्जाद (अ0) ने बड़े अच्छे तरीके से अन्जाम दिया है। आप पूरी सियासी समझदारी और बहादुरी व शान का मुज़ाहेरा करते हुए निहायत ही एहतियात और गहरी नज़र से अपने फ़राएज़ अन्जाम देते रहे यहाँ तक कि तक़रीबन 35 साल की अन्थक कोशिश और खुदाई नुमाइन्दगी की अज़ीम ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के बाद आप सरफ़राज़ व सरबुलन्द इस दुनिया से कूच कर गए और अपने बाद इमामत व विलायत का अज़ीम बोझ अपने बेटे व जानशीन इमाम मुहम्मद बाकिर (अ0) के हवाले फरमा गए।

चुनानचे इमाम मुहम्मद बाकिर (अ0) को मन्सबे इमामत और हुकूमते इस्लामी की तश्कील की ज़िम्मेदारियों का सौंपा जाना रिवायात में बड़े ही खुले लफ़्ज़ों के साथ मौजूद है। एक रिवायत के मुताबिक़ इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) ने अपने बेटों को इकट्ठा किया और मुहम्मद बिन अली (अ0) यानी इमामे मुहम्मद बाकिर (अ0) की तरफ़ इशारा करते हुए फरमाया:—

“यह सन्दूक़ और यह हथियार संभालो यह तुम्हारे हाथों में अमानत है।”

और जब सन्दूक़ खोला गया तो उसमें कुर्आन और किताब थी।

मेरे ख़याल में हथियार से, इंकिलाबी

क़यादत और रहबरी की तरफ़ इशारा, कुर्आन व किताब, इस्लामी इफ़कार व नज़रियात की अलामत है और यह चीज़ें इमाम ने अपने बाद आने वाले इमाम की हिफ़ाज़त में देकर निहायत ही इत्मिनान व सुकून के साथ आगाह व बेदार इन्सानों और खुदावन्दे आलम की नज़र में सरफ़राज़ व सुरख़ुरु इस दुनिया को ख़ैरबाद कहा है।

यह जनाबे इमामे सज्जाद की पाक ज़िन्दगी का एक मजमुअी ख़ाका है अब अगर हम तमाम ज़िन्दगी के हिस्सों का तफ़सीली जाएज़ लेना चाहें तो सूरते हाल को पहले से मुअय्यन कर लेना चाहिए।

हज़रत (अ0) की मुबारक ज़िन्दगी में एक छोटा से दौर वह भी है जिसको मनार-ए-ज़िन्दगी कहना ग़लत न होगा। मैं चाहता हूँ कि सबसे पहले इसी का ज़िक्र करूँ और फिर इमाम (अ0) की मामूल के तहत आदी ज़िन्दगी, उस ज़माने के हालात और माहोल और उनकी ज़रूरतों को बयान करूँगा।

असल में इमाम की ज़िन्दगी का वह मुख़्तसर और तारीख़ी दौर, कर्बला के वाक़े के बाद आपकी कैद का ज़माना है जो मुद्दत के एतेबार से छोटा लेकिन वाक़ेआत व हालात के एतेबार से बहुत ही हिला देने वाला और सबक़ लेने वाला है जहाँ कैद के बाद भी आप का मौक़िफ़ बहुत ही सख़्त और दूसरे के मुक़ाबले में बचाव करने वाला रहता है। बीमार और कैद होने के बावजूद किसी बड़े मर्दे मुजाहिद की तरह अपने कौल व फ़ेल के ज़रिए बहादुरी व दिलेरी के बेहतरीन नमूने पेश किये हैं। इस दौरान इमाम का अन्दाज़ हज़रत की बक़िया ज़िन्दगी से, जैसा कि आप आगे देखेंगे, बिल्कुल अलग नज़र आता है। इमाम (अ0) की ज़िन्दगी के असली दौर में

आपकी हिकमते अमली मज़बूत बुनियाद पर बड़े ही नपे-तुले अन्दाज़ में नर्मी के साथ अपने मक़सद की तरफ आगे बढ़ना है यहाँ तक कि किसी वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान के साथ न सिर्फ़ एक महफ़िल में बैठे हुए नज़र आए हैं बल्कि उसके साथ आपका अन्दाज़ भी नर्म नज़र आता है, जबकि इस छोटी सी मुद्दत (क़ैद के ज़माने) में आपके एकदमात बिलकुल किसी पुरजोश इंक़िलाबी की तरह नज़र आते हैं जिसके लिए कोई मामूली सी बात भी बर्दाश्त कर लेना मुमकिन नहीं है। लोगों के सामने बल्कि भरी भीड़ में भी घमण्डी और बड़ी शान वाले दुश्मन का मुहँतोड़ जवाब देने में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं करते।

कूफ़े का दरिन्दा सिफ़त खूँखार हाकिम, उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद जिसकी तलवार से खून टपक रहा है जो रसूल (स०) के बेटे इमामे हुसैन(अ०) और उनके मददगारों और साथियों का खून बहा कर मस्त व घमण्डी और कामियाबी के नशे में बिलकुल चूर है उसके मुकाबले में हज़रत (अ०) ऐसा बेबाक और सख़्त अन्दाज़ एख़्तियार करते हैं कि इब्ने ज़ियाद आपके क़त्ल का हुक्म जारी कर देता है चुनानचे अगर जनाबे ज़ैनब (स०) ढाल की तरह आपके सामने आकर यह न कहें कि मैं अपने जीते जी ऐसा हरगिज़ न होने दूँगी और एक औरत के क़त्ल का मसला सामने न आता और यह कि क़ैदी के तौर पर दरबारे शाम में हाज़िर करना मक़सूद न होता तो अजब नहीं इब्ने ज़ियाद इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ०) के खून से भी अपने हाथ रंगीन कर लेता।

बाज़ारे कूफ़ा में आप अपनी फूफी जनाबे ज़ैनब (अ०) और अपनी बहन जनाबे सकीना (अ०) के साथ एक आवाज़ होकर तक़रीर करते हैं लोगों में जोश व जज़्बा पैदा करते हैं और

हकीक़तों को सामने ले आते हैं।

इसी तरह शाम में चाहे वह यज़ीद का दरबार हो या मस्जिद में लोगों की बेपनाह भीड़, बड़े ही खुले अलफ़ाज़ में दुश्मन की साज़िशों से पर्दा उठाकर हकीक़तों को बहादुरी के साथ इज़हार करते रहते हैं चुनानचे हज़रत के उन तमाम खुत्बों और तक़रीरों में अहलेबैत (अ०) की हक्क़ानियत, ख़िलाफ़त के सिलसिले में उनका हक़ और मौजूदा हुक्मत के जुर्म और जुल्म व ज़ियादती का पर्दा चाक करते हुए निहायत ही कड़वे-कटीले अन्दाज़ में भूली हुई और अन्जान अवाम को झिंझोड़ने और जगाने की कोशिश की गई है।

यहाँ उन खुत्बों को नक़ल करके इमाम (अ०) के जुमलों की गहराई पेश करने की गुंजाईश नज़र नहीं आती क्योंकि यह खुद एक मुस्तक़िल काम है और अगर कोई शख्स इन खुत्बों की तशरीह व तफ़सीर करना चाहता है तो उसके लिए ज़रूरी है कि उन बुनियादी हकीक़तों को सामने रखते हुए एक-एक लफ़्ज़ की तहकीक़ और छान-फटक करे। यह है इमाम (अ०) की क़ैद व बन्द की ज़िन्दगी जो ज़ुराअत व हिम्मत और बहादुरी व दिलावरी से भरी हुई नज़र आती है।

रिहाई के बाद!

ज़हनों में यह सवाल पैदा होता है कि आख़िर वह कौन सी वजहें थीं जिनके सामने इमाम (अ०) की मौक़िफ़ में ऐसी तबदीली पैदा हो गई कि अब क़ैद से छूटकर आप निहायत ही नर्मी का मुज़ाहेरा करने लगते हैं। तक़ैय्यः से काम लेते हैं। अपने तेज़ व तीखे इंक़िलाबी इक़दामात पर दुआ और नर्मी का पर्दा ढाल देते हैं तमाम मामले बड़ी ख़ामोशी के साथ अन्जाम देते हैं जबकि क़ैद व बन्द के आलम में आपने ऐसे पक्के इरादों का इज़हार और जेहादी इक़दाम फरमाया है?

तो इसका जवाब यह है कि यह एक अलग दौर था यहाँ जनाब इमामे सज्जाद (अ0) को इमामत के फ़राएज़ की अदायगी और खुदाई व इस्लामी हुक्मत को काएम करने के लिए मौक़े जुटाने थे और साथ ही आशूरा को बहने वाले बेगुनाहों के ख़ून की तर्जुमानी भी करनी थी..... हकीकत तो यह है कि यहाँ जनाब इमामे सज्जाद(अ0) के ज़हन में उनकी अपनी ज़बान न थी बल्कि तलवार से ख़ामोश कर दी जाने वाली हुसैन (अ0) ज़बान उस वक़्त कूफ़ा व शाम की मंज़िलों से गुज़रने वाले इस इंकिलाबी जवान के अन्दर उतार दी गई थी।

चुनानचे अगर इस मंजिल में इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) ख़ामोश रह जाते और इस ज़ुरात व हिम्मत और जवाँमर्दी व बेबाकी के साथ हकीकतों को सामने लाकर दूध का दूध और पानी का पानी न कर दिये होते तो आगे आपके मक़सद के पूरा होने की तमाम राहें बन्द होकर रह जातीं क्योंकि यह इमामे हुसैन (अ0) का जोश मारता हुआ ख़ून ही था जिसने न सिर्फ़ आपके लिए मैदान तैयार कर दिया बल्कि तारीख़े तशैय्युअ में जितनी भी इंकिलाबी तहरीकें उठी हैं उन सब में ख़ूने हुसैन की गर्मी शामिल नज़र आती है चुनानचे इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) सबसे पहले लोगों को मौजूदा सूरते हाल से ख़बरदार कर देना ज़रूरी समझते हैं ताकि आगे अपने इसी अमल की रौशनी में बुनियादी व उसूली, गहरी व मज़बूत, लम्बी मुख़ालफ़तों का सिलसिला शुरु कर सकें और ज़ाहिर है कि तेज़ व सख़्त ज़बान इस्तेमाल किये बग़ैर लोगों को जगाना और होशियार करना मुमकिन न होता।

इस क़ैद व बन्द के सफ़र में जनाब इमामे सज्जाद (अ0) का किरदार जनाबे ज़ैनब (स0) के किरदार से बिलकुल मिला हुआ है दोनों का मक़सद

हुसैनी इंकिलाब और पैग़ामात की तबलीग़ व इशाअत है अगर लोग इस बात को जान जाएँ कि हुसैन (अ0) क़त्ल कर दिये गए, क्यों क़त्ल किये गए? और किस तरह क़त्ल किये गए? तो आगे, इस्लाम और अहलेबैत (अ0) की दावत एक नया रंग एख़्तियार करेगी लेकिन अगर अवाम इन हकीकतों को नहीं जान पाए तो अन्दाज़ कुछ और होगा।

इसलिए समाज में इन हकीकतों को आम कर देने और सही तौर पर हुसैनी इंकिलाब को पहुँचाने के लिए अपनी तमाम दौलत सामने लाकर जहाँ तक मुमकिन हो सके इस काम को अन्जाम देना ज़रूरी था। चुनानचे जनाब इमामे सज्जाद(अ0) का वजूद भी जनाबे सकीना (अ0), जनाबे फातिम सुग़रा (अ0), खुद जनाबे ज़ैनब (स0) बल्कि एक-एक क़ैदी की तरह (अपनी-अपनी ख़ूबी के एतेबार से) अपने अन्दर एक पैग़ाम लिए हुए है। ज़रूरी था कि यह तमाम इंकिलाबी ताक़तें एक होकर ग़रीबी व बेकसी में बहा दिये जाने वाले हुसैनी ख़ून की लाली कर्बला से लेकर मदीने तक तमाम बड़े-बड़े इस्लामी मरकज़ों में फैला दें।

जिस वक़्त इमामे सज्जाद (अ0) मदीने में वारिद हों लोगों की बेचैन व जासूस, सवाली निगाहों, चेहरों और ज़बानों के जवाब में आप उनके सामने हकीकतें बयान करें। और यह इमाम की आइन्दा की तैयारी का पहला नक़्शा है.....इसी लिये हमने इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) के इस मुख़्तसर ज़िन्दगी के हिस्से को एक अलग दौर कहा है।

इस मुहिम का दूसरा दौर उस वक़्त शुरु होता है जब आप रसूल (स0) के शहर में एक इज़्ज़तदार शहरी की हैसियत से अपनी ज़िन्दगी की शुरुआत करते हैं और अपना काम पैग़म्बरे इस्लाम के घर और आप (स0) के हरम (मस्जिदुन्नबी स0) से शुरु करते हैं। □□□

इत्तेहादे इस्लामी

काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक्वी साहब किब्ला

इस्लाम में इत्तेहाद और इत्तेफाक को बुनियादी हैसियत हासिल है। कुर्आने मजीद में इरशाद है: “*वअतसिम् बिहबिल्लाहि जमीअव्वं वला तफर्कू*” इस हकीकत से कोई इनकार नहीं कर सकता कि कोई भी मक्सद बगैर इत्तेहाद हासिल नहीं हो सकता। खुदावन्दे आलम ने इबादात में भी इत्तेहाद को आगे रखा है। दूसरे मज़ाहिब में इबादते खुदावन्दी एक अकेलेपन का काम है इसलिए इबादत जितने ही अकेले में अन्जाम दी जाए उतना ही उनकी नज़र में उस इबादत का दर्जा बड़ा है। इसलिए साधू-सन्त पहाड़ों की गुफाओं, जंगलों, बियाबानों में, आबादियों से दूर जगह ढूँढ़कर अपने-अपने माबूदों की इबादत में लगे रहते हैं। जबकि इस्लाम ने इसके बिलकुल उलटा ख़याल पेश किया है।

दूसरे मज़ाहिब में जितने अकेले में इबादत हो तो सवाब ज़ियादा ख़याल किया जाता है इस्लाम ने कहा अगर अकेले नमाज़ पढ़ोगे तो सवाब कम है अगर सबके साथ नमाज़ पढ़ोगे तो सवाब बेशुमार। अगर नमाज़ का बेहिसाब बदला लेना है तो जंगलों, बियाबानों को छोड़कर इन्सानी समाज और आबादियों में आना पड़ेगा। हदीसे शरीफ के मुताबिक़ अगर जमाअत में इमाम के अलावा एक मामूम हो तो हर रक्अत पर तीन सौ रक्अतों का सवाब होगा। अगर दो लोग हों तो छः सौ रक्अतों का सवाब होगा। इस तरह दस लोगों तक सवाब दोगुना होता चला जाएगा लेकिन अगर दस लोगों से ग्यारह हो जाएँ तो अब अज़

व सवाब बेहिसाब हो जाएगा।

शायद नमाज़े जमाअत की ताकीद से मक्सदे इलाही यह हो कि जब रोज़ाना पाँच बार महल्ले के लोग एक साथ इकट्ठा होंगे तो आपस में मुहब्बत पैदा होगी। आपसी ग़लतफ़हमियाँ दूर होंगी क्योंकि दूरियों से एख़िलाफ़ात को हवा मिलती है और करीब आने से ग़लतफ़हमियाँ दूर होने का मौक़ा हासिल होता है। या दूसरे लफ़्ज़ों में एख़िलाफ़ात डलवाने वालों और लड़वाने वालों की कोशिशें नाकाम हो जाएँगी।

इसके बाद नमाज़े जुमा पर ज़ोर दिया गया है ताकि हफ़्ते में एक बार अलग-अलग महल्लों के मुसलमानों में इत्तेहाद व इत्तेफाक़ की फ़िज़ा बने।

इसके बाद हज का फ़रीज़ा है ताकि साल में एक बार सारी दुनिया के मुसलमानों का ज़बरदस्त इज्तेमाह हो। सब एक दूसरे के मसाएल को समझें, आने वाली मुश्किलों का एक-साथ हल तलाश करें और आपसी मदद का रास्ता साफ़ हो। एक मुसलमान अगर अकेले भी इबादत कर रहा हो तो उसे भी ताकीद है कि यही कहे: “*इय्या-क नअबुदू*” हम सब तेरी इबादत करते हैं। “*वइय्या-क नस्तअीन*” हम सब तेरी मदद चाहते हैं। इस आयते शरीफ़ा की तफ़सीर में अल्लमा फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने अपनी तफ़सीर “तफ़सीरे कबीर” में बड़ी उमदा बात लिखी है कि जब हर नमाज़ी यह कहता है कि हम सब तेरी इबादत कर रहे हैं तो अल्लाह तआला के दरबार

में सारी इबादतें एक साथ पेश की जाती हैं। जिसमें हम जैसे गुनाहगारों की नमाज़ें और इबादतें भी होती हैं और औलिया-ए-खुदा और खुदा के ख़ास बन्दों की भी। नाक़िस नमाज़ें भी और कामिल नमाज़ें भी। इस्लामी तिजारत का उसूल यह है कि अगर किसी ने कोई माल ख़रीदा है तो उसमें अगर कुछ कम है और कुछ सही, तो ख़रीदने वाला या तो सारा माल वापस करेगा या सारा क़बूल करेगा। यह नहीं हो सकता कि अच्छा माल तो रख ले और ख़राब वापस कर दे। इसलिए जब नमाज़ें इलाही दरबार में पहुँचेंगी और एक साथ पहुँचेंगी तो उसमें हम जैसों की कमी वाली नमाज़ें और औलिया-ए-खुदा की कामिल नमाज़ें भी होंगी तो या तो अल्लाह खुद अपने बनाए हुए क़ानून के मुताबिक़ सारी नमाज़ें क़बूल फरमाएगा या सबको रद्द कर फरमाएगा। अगर रद्द फरमाए तो बुजुर्गाने दीन की नमाज़ें भी रद्द हो जाएँगी। इसलिए उन नमाज़ों के तुफ़ैल में हमारी कमी वाली इबादतें भी क़बूल हो जाएँगी। यह है इत्तेहाद का बहुत ही ख़ूबसूरत फल।

इत्तेहाद के बग़ैर अफ़राद तो ज़िन्दा रह सकते हैं कौमें नहीं। इत्तेहाद कौम की रूह का नाम है। इत्तेहाद ही ताक़त है और इत्तेहाद ही ज़िन्दगी है। जब अनासिर में इत्तेहाद होता है तो ज़िन्दगी सामने आती है और यही इत्तेहाद जब ख़त्म होता है तो मौत का पैग़ाम आता है:

**ज़िन्दगी क्या है अनासिर में ज़हूरे तरतीब
मौत क्या है इन्हीं अजज़ा का परेशाँ होना**

दुश्मन की सबसे पहली कोशिश यह होती है कि सामने वाले के इत्तेहाद को तोड़ डाले। स्पेन की इबरतअंगेज़ तारीख़ हमारे सामने है। जहाँ मुसलमानों की तबाही की वजह उनके झगड़े और आपसी जंग थी।

आज इस्लाम के ख़िलाफ़ सारी ताक़तें आपस में एक होकर इस्लाम के ख़िलाफ़ खड़ी नज़र आ रही हैं। उन्होंने अपने सारे झगड़े किनारे रख दिए हैं। ईसाई और यहूदी जिन्होंने हमेशा एक दूसरे के गले काटे हैं आज गले मिल रहे हैं। यहाँ तक कि पिछले पोप ने फतवा जारी किया कि जनाबे ईसा (अ0) को यहूदियों ने सूली पर नहीं चढ़ाया। यह इतना बड़ा झूठ सिर्फ़ इसलिए बोला ताकि यह दोनों कौमें एक होकर मुसलमानों का मुक़ाबला करें।

रसूले इस्लाम (स0) इसलिए भेजे गए थे कि काफ़िरों को मुसलमान बनाएँ लेकिन कुछ हमारे मोलवी हज़रात मुसलमानों को काफ़िर बनाने का मुक़द्दस फ़र्ज़ अन्जाम देते रहते हैं। इस वक़्त दुनिया में जहाँ-जहाँ मुसलमान नुक़सान उठा रहे हैं वह सब अपने ही झगड़ों की वजह से। और जब तक मुत्तहेद होकर एक मरकज़ पर नहीं आ जाएँगे इसी तरह नुक़सान उठाते रहेंगे और खुदगर्ज़ लोग इसी तरह बुरे फाएदे उठाते रहेंगे। हिन्दुस्तान में भी मुसलमानों के हुकूक़ जो बराबर दबाए जा रहे हैं वह खुद मुसलमानों में इत्तेहाद के न होने के सबब से हैं। इसमें अवाम का क़सूर कम और ख़ास लोगों की ज़िम्मेदारी ज़ियादा है। इस वक़्त मुसलमानों के सारे फिरके एक कश्ती पर सवार हैं जो मुख़लिफ़तों से समुन्द्र में डूँवाडोल है अगर इस कश्ती पर सवार लोग आपस में लड़ गए तो कश्ती डूबने की वजह से सब डूबेंगे। न शीआ बचेंगे न सुन्नी, न देवबन्दी न बरेलवी। इसलिए अगर अपने को बचाना है तो इत्तेहाद को तो दिखाना ही होगा। *“वमाअलैइना इल लल बलाग़”*



माँ-बाप के हुक्म औलाद पर और औलाद से मुताल्लिक माँ-बाप की जिम्मेदारियाँ

इमादुल उलमा अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब किब्ला

कुआनि हकीम में अल्लाह का फरमान

और हम ने इन्सान को हुक्म दिया कि अपने माँ-बाप के साथ नेक बर्ताव करता रहे। उसकी माँ ने उसे तकलीफ़ के साथ पेट में रखा और बड़ी तकलीफ़ के साथ पैदा किया।

(सूर-ए-अह्काफ़ आयत-15)

और तुम्हारे परवरदिगार ने हुक्म दिया है कि सिर्फ़ उसी की इबादत करो और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करते रहो फिर अगर तुम्हारे सामने वह बुढ़ापे को पहुँच जाएँ उनमें से एक या दोनो तो उनके मुक़ाबले में "उफ़" तक न करना और न उन्हें झिड़कना और उनसे अदब के साथ बात करना और उनके सामने रहमदिली के साथ इन्केसार के साथ झुके रहना और कहते रहना कि ऐ मेरे परवरदिगार इन पर रहम फरमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपने में परवरिश किया है।

(सूर-ए-बनीइस्राईल आयत-23-24)

एक दूसरी जगह पर इरशाद हुआ है:-

अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को भी उसका शरीक न बनाओ और अपने माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करते रहो।

(सूर-ए-निसाँ आयत-36)

एक और जगह कुआनि में खुदा ने फरमाया:

(ऐ रसूल स०) तुम लोगों से कह दो कि जो कुछ तुम नेक कामों में खर्च करो वह माँ-बाप और रिश्तेदारों के लिए करो। (और उन लोगों के लिए जिनका आयत में आगे ज़िक्र किया गया है।)

(सूर-ए-बक़र: आयत-215)

इरशादाते सरवरे काएनात (स०)

हुजूर (स०) ने फरमाया: अल्लाह का किसी को शरीक न बनाओ चाहे तुम्हें आग में जला दिया जाए और अपने माँ-बाप की इताअत व फरमाँबरदारी करते रहो और हमेशा उनके हुक्म पर अमल करो चाहे वह ज़िन्दा हों या वफ़ात पा चुके हों।

(उसूले काफ़ी: जि-2 पे-158)

किसी शख्स के बार-बार इस सवाल के जवाब में कि किसके साथ नेक सुलूक करूँ हुजूर (स०) ने तीन बार इरशाद किया: अपनी माँ के साथ। फिर चौथी बार फरमाया, अपने बाप के साथ।

(बुख़ारी: जि-2 पे-883/उसूले काफ़ी: जि-2 पे-159/तिरमिज़ी: पे-282 वगैरः)

हुजूर अनवर (स०) की ख़िदमत में एक शख्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ की: मुझे जेहाद का बड़ा शौक़ है। आपने फरमाया: फिर तुम जेहाद में शरीक हुआ करो क्योंकि अगर तुम शहीद हो गए तो तुम्हें हमेशा की ज़िन्दगी मिलेगी और अल्लाह

की बारगाह से रिज़्क मिलता रहेगा और ज़िन्दा रह गए तो तुम्हारे पिछले सब गुनाह माफ हो जाएँगे। उसने अर्ज़ की मेरे बूढ़े माँ-बाप मौजूद हैं और वह मुझसे बहुत मुहब्बत करते हैं और मुझे अपने से अलग नहीं होने देते। हुजूर ने फरमाया: अगर ऐसा है तो फिर तुम उनके पास ही रहा करो और जेहाद में शरीक न हो। उस ज़ात की क़सम जिसके कब्जे में मेरी जान है, तुम्हारा अपने माँ-बाप के पास उनकी तसल्ली के लिए सिर्फ एक रात-दिन मौजूद रहना सालभर जेहाद करते रहने से अफ़ज़ल है। (यह बात उस वक़्त होगी जबकि किसी पर जेहाद शरीअत के हिसाब से वाजिब न हो जाए। रज़ी)

(उसूले काफी: जि-2 पे-160)

इस तरह के मज़मून की हदीस बुख़ारी, जि-2 पे-283 वग़ैर: में भी है। हुजूर (स0) ने फरमाया: (जो बात हुक्मे खुदा के ख़िलाफ़ न हो) उसमें जो कुछ माँ-बाप की मर्ज़ी हो उसी में अल्लाह की खुशी है और जिस चीज़ में उनकी मर्ज़ी न हो उसमें अल्लाह की भी मर्ज़ी नहीं होती।

(हुजूर स0 का यह भी इरशाद है): कबीर: गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह “शिरक” है फिर उसके बाद माँ-बाप की नाफरमानी।

(तिरमिज़ी: पे-283/अलखुल्कुलकामिल: जि-3 पे-188
बहवाला तबरानी वग़ैर:)

हुजूर (स0) ने फरमाया: जिन गुनाहों की सज़ा अल्लाह देना चाहेगा क़यामत में देगा मगर माँ-बाप की नाफ़रमानी की सज़ा वह औलाद को दुनिया की ज़िन्दगी ही में दे देता है और उसे

क़यामत पर उठा नहीं रखता।

(अलअदबुल मुफ़रद लिलबुख़ारी: पे-7/अलखुल्कुलकामिल: जि-3 पे-190 बहवाला तबरानी वग़ैर:)

हुजूर अनवर (स0) का इरशाद है: अगर औलाद के किसी बुरे काम से माँ-बाप को तकलीफ़ पहुँचे और वह रोने लगें तो उस रोने से औलाद अपने आप आक़ हो जाती है।

(अलअदबुल मुफ़रद लिलबुख़ारी: पे-8)

हुजूर का फरमान है:

मज़लूम की बददुआ से डरो क्योंकि उसकी क़बूलियत में कोई पर्दा नहीं होता। इसी तरह औलाद अपने बाप की बददुआ से डरे क्योंकि उसकी काट तलवार से ज़ियादा तेज़ होती है।

(उसूले काफी: जि-2 पे-509)

हुजूर (स0) का इरशाद है:

तीन दुआएँ यकीनन क़बूल होती हैं: मज़लूम और मुसाफ़िर की दुआ और माँ-बाप की बददुआ औलाद के हक़ में।

(अलअदबुल मुफ़रद लिलबुख़ारी: पे-8/तिरमिज़ी: पे-283)

रसूले करीम (स0) का इरशाद है:

वह आदमी बड़ा बदक़िसमत है जो अपने माँ-बाप का बुढ़ापा पाए और फिर उनकी इताअत करके और उन्हें खुश करके उनकी दुआओं से अपने को जन्नत का मुस्तहक़ न बना ले।

(तफ़सीर इब्ने कसीर/तफ़सीर मजमउलबयान/ तफ़सीरे साफ़ी
वग़ैर: सूरह बनीइस्राईल 23-24/ सही मुस्लिम: जि-2 पे-314)

हुजूर (स0) ने फरमाया:

माँ के पैरों के नीचे जन्नत है।

(मिशकात/मुसनद अहमद/नेसाई/बैहकी वगैर: बहसे बिर व सिल:)

(इमामे जाफ़र सादिक अ0) माँ-बाप की तरफ गुस्से में औलाद का तेज़ निगाहों से देखना उसको अपने आप आक बना देता है और फिर उसकी नमाज़ और कोई इबादत कबूल नहीं होती। (जब तक वह तौब: न करे और माँ-बाप उसकी उस निगाह को माफ न कर दें)

(और आपने फ़रमाया):

जो शख्स अपने माँ-बाप की इताअत करता है, अल्लाह मौत के वक़्त की सख़्तियाँ उस पर आसान कर देता है।

(सफीनतुल बहार: जि-2 पे-687)

माँ-बाप पर औलाद के हुक्क़ और ज़िम्मेदारियाँ क़ुर्आन और हदीस की रौशनी में

ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर, ख़ानदान वालों को उस आग (जहन्नम) से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।

(मतलब यह हुआ कि अपने घर, ख़ानदान वालों को जिनमें लाज़मी तौर पर औलाद भी दाख़िल है बुराईयों से बचाना हर शख्स की ज़िम्मेदारी है और क़यामत में उसके लिए उससे पूछ-ताछ की जाएगी।)

हुज़ूर (स0) ने फ़रमाया:

जिस घर में बच्चे न हों बरकत नहीं होती, औलाद जन्नत के फूल हैं। अपनी औलाद की क़दर करो और उसे अच्छे अदब सिखाओ क्योंकि वह तुम्हारे लिए अल्लाह की बारगाह का

तोहफा है। अपनी औलाद से मुहब्बत के इज़हार में बराबरी और इंसाफ करने को अल्लाह पसन्द फरमाता है।

(अलखुलकुल कामिल: जि-3 पे-185 बहवाला तिरमिज़ी व बुख़ारी)

हुज़ूर अनवर (स0) का इरशाद है:

जो अपनी औलाद को खुश करे अल्लाह उसे क़यामत के दिन खुश करेगा। बच्चों के साथ रहम और मुहब्बत का बर्ताव किया करो और जब उनसे कोई वादा करो तो उसको पूरा करो। वालिद पर ज़रूरी है कि अपनी औलाद को दीन की तालीम दे उसके किरदार की इस्लाह करे। उस पर जुल्म न करे और उसके हुक्क़ को अदा करे। औलाद इन्सान के लिए आजमाइश का ज़रिया है बेटियाँ भी फूल हैं और अल्लाह का इनाम हैं।

(उसूले काफी: जि-6 पे-6/48/49/50)

हुज़ूर ने इरशाद किया:

मुसलमानो! तुम में से हर शख्स हाकिम है और वह अल्लाह के सामने अपनी रिआया के कामों का जवाबदेह है। यानी उससे उनके कामों की पूछ-ताछ होगी। (चाहे वह शख्स किसी मुल्क का हाकिम हो या किसी घर, ख़ानदान, स्कूल, कौम और किसी आफिस की देखभाल करने वाला और चाहे वह औरत हो या मर्द हो, अपने मातहत लोगों के कामों की जवाबदेही का अल्लाह के दरबार में ज़िम्मेदार है।)

(तिरमिज़ी: पे-261/मुस्लिम: जि-2 पे-123/बुख़ारी:

जि-2, बाबुनिकाह पे-783 वगैर:)



“और तक्वे का पहनावा ही अच्छा भला है।”

(सूर-ए-आराफ़)

घर और समाज में खुदा का डर (तक्वा)

(पिछले शुमारे से आगे)

तक्वे वाले मियाँ-बीवी

तक्वा रखने वाला, संयमी मर्द घर के खर्चे हलाल कमाई से पूरे करता है। हलाल माल छोड़ दूसरी चीज़ क़बूल नहीं करता। वह सभी लोगों के हक़ का ख़याल रखते हुए खुदा का हलाल किया हुआ ही कमाता है। यानी वह खुदा के बन्दों को नुक़सान नहीं पहुँचाता है, वह तक्वे की खातिर हराम की ओर नहीं देखता है और मन की पाकी और कम खर्ची से खुशी के खज़ाने को बर्बाद नहीं करता है।

तक्वे वाले लोग जब काम से फुरसत पाकर घर लौटकर आते हैं तो वे दिन भर की थकान को दरवाज़े के बाहर ही छोड़ देते हैं और खुशी-खुशी घर में जाते हैं, बीवी से मुसकुरा कर बातचीत करते हैं, बीवी जो दिनभर घर की सफ़ाई सुथराई, खाना-पकाने और बच्चों की देखभाल में तकलीफ़ उठाती है उसकी कद्र करते हैं, उससे और बच्चों से प्यार के साथ मिलते हैं और हरेक की उसके लिहाज़ से इज़्ज़त, सम्मान करते हैं।

तक्वे वाले लोग सूझबूझ रखने वालों के सामने हलाल-हराम, अच्छे-बुरे और अच्छाई-बुराई को बताते हैं और उन्हें दीन से और दीन वाला बनने से लापरवाह नहीं होने देते। तक्वे वाले लोग अपनी उम्र के किसी पल को बेकार नहीं

हुज्जतुल इस्लाम प्रो० हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु० र० आबिद

जाने देते, वे सिर्फ़ अपने दोस्तों ही के लिए खुशी नहीं दिखाते और न ही मस्जिदों और मज़हबी प्रोग्रामों में शरीक होने में ज़्यादा करते हैं।

तक्वे वाले इस बात पर नज़र रखते हैं कि इस्लाम हर चीज़ यहाँ तक इबादत में भी बीच के रास्ते का हुक्म देता है और बीवी बच्चों को छोड़कर दोस्त के पास ज़्यादा आने जाने और प्रोग्रामों में ज़्यादा शरीक होने से मना करता है।

तक्वे वाला आदमी हर हाल में ज़िन्दगी के हर काम में ज़रूरी आदाब (संस्कार) का लिहाज़ करता है। इस तरह वह घर-घराने की नींव मज़बूत और बीवी बच्चों से प्यार पा लेता है। तक्वा वाली औरत अपनी इज़्ज़त और पाकी को बचाए रखती है, घर के काम दिल लगाकर और शौक से करती है, अपने पति की थकान दूर करने और खुश करने के जतन करती है, अपने बच्चों की अच्छे से अच्छे तरीक़े से देखभाल करती है, पति और बच्चों के साथ इस्लामी चलन से बर्ताव करती है, अपनी इबादत से लापरवाही नहीं बरतती और अपने घर को प्यार मुहब्बत, मेहरबानी और वफ़ा का केन्द्र बना देती है।

तक्वे वाली औरत खुदा के बनाये हुए उसूलों के मुताबिक़ अपने पति का कहना मानती है, उसके सही जायज़ हक़ और माँगो-चाहतों

को पूरा करती है और गुस्से, घमण्ड को पास फटकने नहीं देती। सुसराल वालों से इस्लामी संस्कार और प्यार-नमी, मेहरबानी से मिलती है और जब पति काम से वापस आता है तो उसे लेने दरवाजे तक जाती है और जब पति जाता है तो पहुँचाने जाती है और उससे प्यार से कहती है कि सिर्फ हलाल कमाई घर लाना, मैं खुदा के हलाल किये हुए पर चाहे कम ही क्यों ने हो राजी खुशी रहूँगी और हराम को न लूँगी। खुदा के दिये हुए भाग्य, मुक़द्दर को इस तरह रौंद न देना कि, मेरे यहाँ बीवी बच्चे हैं, खर्च ज़्यादा है (और हराम कमाओ)

तक़वे वाली औरत लालच से बचती रहती है, अपने पति को अपने घर या पति के ख़ानदान वालों के रंग में रंग जाने पर मजबूर नहीं करती है और उसकी आखें नीची नहीं करती।

ऐसे ही मियाँ-बीवी खुदा के चहीते, ने किसी के साते और इन दोनों के साये तले खुदा की पसन्द का घर बन जाता है और इस घर के माहौल में सच, (खुदा) चाहने वाले (यथार्थी) बच्चे पलते हैं। बहर हाल मियाँ बीवी को चाहिए कि वे अल्लाह वालों की तरह ज़िन्दगी के मामलों में खुदाई समझ, इस्लामी काएदे और शरीअत के क़ानून का लिहाज़ रखें।

मिसाली कमाने वाले

मेरे बाप मेरी माँ से कहते थे कि जब तक शहर से दूसरे शहर का सफ़र चौपायों से (घोड़ ख़च्चर वगैरा से) किया जाता था उस ज़माने में हम अपने दोस्तों के साथ ख़ाँनसार के इलाक़े से इस्फ़हान के रास्ते इमामे रिज़ा के रौज़े की ज़ियारत के लिए रवाना हुए। मेरे ज़िम्मे दोस्तों

की ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदना था। दामग़ान शहर में सुबह के समय मैं एक दुकान पर पहुँचा। एक चीज़ की ज़रूरत थी। दुकानदार ने मुझे अन्दर बुला लिया। ज़ायर (ज़ियारत करने वाला) समझ कर बहुत ख़ातिर की। एक और ग्राहक आ गया जो बहुत सी चीज़ें ख़रीदना चाहता था। दुकानदार ने कहा मेहरबानी करके ये चीज़ें सामने वाली दुकान से ले लीजिये। ग्राहक चला गया। मैंने कहा ये चीज़ें तुम्हारे पास बहुतात में मौजूद हैं क्यों न बेची। वह कहने लगा कि सुबह मैंने उस दुकानदार का चेहरा उतरा हुआ देखा था। मैंने वजह मालूम की। कहा मुझ पर क़र्ज़ है और आज क़र्ज़ चुकाने का दिन है लेकिन कल से अभी तक इतनी बिक्री नहीं हुयी कि जिससे क़र्ज़ अदा हो सके। उसके हाल पर मुझे रहम आया। इसलिए मैंने अपने ग्राहक उसकी दुकान पर भेज दिये ताकि उसे इस दुख से नजात मिल जाए। क्योंकि मोमिन को अपने मोमिन भाई का ख़याल रखना चाहिए। हाँ हम सबको एक-दूसरे का ख़याल रखना चाहिए। ख़ासकर पति को अपनी बीवी का, बीवी को अपने मियाँ का लिहाज़ रखना चाहिए ताकि घर की बुनियाद खुदाई और इस्लामी संस्कार (आदाब) पर खड़ी हो जाए और नतीजे में उस घर के बच्चे शरीफ़ और समझदार हो जाएँ।

मेरे प्यारे भाईयों! अपने घर को ख़ासकर सुबह के समय कुआँन मजीद की तिलावत (पाठ) की खुशबू (सेण्ट) से बसायें ताकि इस पाक कुआँन की तिलावत के वक़्त आपकी रुहानी आवाज़ आपके बीवी बच्चों के कानों में पड़े और कानों के रास्ते दिल तक पहुँच जाए, उन्हें इबादत और तिलावत की तरफ़ रुजहान दिलाए और उनमें कुछ को नेकी, तक़वा, बड़ाई और शराफ़त का सोता बना दे।

(जारी)

अक़वाले इमामे जैनुलआबिदीन (अ०)

- ☐ ख़ुदावन्दे आलम बेकार आदमी को पसन्द नहीं करता।
- ☐ अपने ख़ुदा के अलावा किसी और से उम्मीद न रखो।
- ☐ अपनी औलाद का एहतेराम करो और उनकी अच्छी तरबियत करो।
- ☐ हासिद कभी इज़्ज़त नहीं पाता और कीना रखने वाला अपने गुस्से से मरा करता है।
- ☐ दोस्तों का छूट जाना बेकसी है।
- ☐ जिससे मिलो उसे सलाम करो ताकि ख़ुदावन्दे आलम तुम्हारे अज़र में इज़ाफ़ा करे।
- ☐ बदबख़्त वह शख़्स है जो तज़ुर्बे और अक़ल के फ़ाएदे से महरूम रहे।
- ☐ तुम चाहे जितना ताक़त व कुव्वत, माल व दौलत में ज़ियादा हो फिर भी अपने ख़ानदान और क़ौम के मोहताज रहोगे।
- ☐ दुआ से बला व मुसीबत टल जाती है।
- ☐ जब दुनिया वालों की ईद (ईदुलफ़ित्र) आती है तो मोमिनों की ईद (रमज़ानुल मुबारक) चली जाती है।
- ☐ किसी को उस वक़्त तक परहेज़गार न समझा जाएगा जब तक वह शक व शुब्हे वाले कामों से और हराम से न बचेगा।
- ☐ क्या कहना उस शख़्स को जो सामने रहने वाली लज़ज़तो को छुपी हुई नेमतों के हासिल करने के लिए छोड़ दे।
- ☐ कन्ज़ूस को अपना दोस्त न बनाओ क्योंकि इन्तिहाई ज़रूरत के वक़्त वह तुझे महरूम कर देगा।
- ☐ मोमिन की दुआ इन तीन बातों में किसी एक से ख़ाली नहीं होती, या तो उसकी आख़ेरत के लिए ज़ख़ीरा बन जाती है या दुनिया ही में उसका असर ज़ाहिर होता है या कोई ऐसी मुसीबत जो उस तक पहुँचने वाली होती है उससे महफूज़ हो जाता है।
- ☐ छुप कर सद्का देने से ख़ुदावन्दे आलम का गुस्सा ख़त्म हो जाता है।
- ☐ ख़ुदावन्दे आलम उस जवान को पसन्द करता है जो अपने नापसन्दीदा आमाल पर शर्मिन्दा हो और तौबा कर ले।
- ☐ अज़मत उसी को हासिल है जो लोगों को मिज़ाह (मज़ाक़) का ज़रिया न बनाए, उनको धोका न दे और उनके हाल में कमी न करे।

इदारा

मुख्य समाचार

शहीद मुतहहरी की तहरीरों से इस्लामी समाज में इल्मी तहरीक पैदा हुई : मौ० कल्बे जवाद साहब

नई दिल्ली-4, मई। उलमा-ए-इस्लाम ने हमेशा समाज के इल्मी और असरी तकाजों को पूरा किया और उनकी खिदमात के नतीजे में अमन-अमान, सुल्ह व आशती और उखुव्वत ने जन्म लिया। इन खयालात का इज़हार दरगाह पन्जा शरीफ में शहीद मुतहहरी सोसाइटी के ज़ेरे एहतेमाम मुनअक़ेदा कान्फ़रेन्स में उलमा व उदबा ने किया।

सदारती खुत्बा देते हुए काएदे मुअज़्ज़म मौलाना कल्बे जवाद नक़वी साहब ने कहा: शहीद मुतहहरी ने अपने इल्मी कमालात के ज़रिये दुनिया को तालीम याफ़ता बनाने और इफ़कार की इस्लाह के लिए सैकड़ों किताबें लिखीं उनकी तहरीरों के ज़रिये इस्लामी समाज में इल्मी तहरीक पैदा हुई।

कान्फ़रेन्स का आगाज़ मौलाना हैदर मेहदी साहब की तिलावते कलाम पाक से हुआ। नाते पाक अहमद अली ने पेश की।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के शोब-ए-तारीख़ के प्रोफ़ेसर सै० मुहम्मद अज़ीजुद्दीन हुसैन ने शहीद

मुतहहरी की खिदमात का तारीखी जाएज़ा पेश करते हुए कहा कि आपकी इल्मी कोशिशें दानिशगाहों में खुसूसी अहमियत की हामिल हैं। सै० अली ज़हीर नक़वी ने तहकीकी तहकीकी मक़ाला पेश किया। मौलाना शेख़ मुहम्मद असकरी साहब ने कहा: इस्लामी समाज को इस ज़माने में इल्म व दानिश की ज़रूरत है और मुसलमानों में तालीमी बेदारी से मुताल्लिक़ काम करने का तरीका शहीद मुतहहरी की ज़िन्दगी में नज़र आता है। मौलाना मोहसिन नक़वी ने तालीम को समाज की कामियाबी का अहम ज़ीना करार दिया और कहा कि शहीद मुतहहरी की किताबें इस्लामी समाज की इल्मी व फ़िक़्री कामियाबी की ज़मानत हैं।

ईरानी मुहक्कि मौलाना मुहम्मद रज़ा रजब नेजाद साहब और सैय्यद नदीम अब्बास ज़ैदी साहब के ज़रिये सैय्यद हुसैन हैदर रिज़वी को उनकी इल्मी खिदमात के लिए शहीद मुतहहरी एवार्ड 2006 ई० पेश किया गया। आख़िर में मौलाना जलाल हैदर नक़वी साहब ने शुरका का शुक्रिया अदा किया। इस प्रोग्राम में निज़ामत डाक्टर अज़ीम अमरोहवी साहब ने की।

यू०पी०ए० हुकूमत ने ईरान के खिलाफ़ वोट देकर ईरान पर जुल्मे अज़ीम किया : मौलाना कल्बे जवाद साहब

लखनऊ। दरगाह हज़रत अब्बास में तहफ़ज़े औकाफ़ से मुताल्लिक़ एहतेजाजी जलसे में मरकज़ी हुकूमत को आड़े हाथों लेते हुए मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि यू०पी०ए० हुकूमत ने ईरान के खिलाफ़ वोट देकर ईरान पर जुल्मे अज़ीम किया है और अगर हमला हुआ तो उस दौरान वहाँ मारे जाने वालों के खून के धब्बे यू०पी०ए० हुकूमत और उन मोलवियों के दाम पर होंगे जो यू०पी०ए० हुकूमत की हिमायत में बयानबाज़ी कर रहे हैं।

काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब ने कहा कि आज जो उलमा यू०पी०ए० हुकूमत की हिमायत

में बोल रहे हैं और कह रहे हैं कि ईरान के खिलाफ़ वोट देने से मुल्क का फायदा है उन लोगों को यज़ीद की भी हिमायत करनी चाहिए क्योंकि हुकूमत के फायदे के लिए ही उसने रसूले खुदा (स०) के नवासे हज़रत इमामे हुसैन (अ०) और उनके कुन्बे को शहीद कर दिया था। उन्होंने कहा कि ऐसे मोलवियों को मिम्बर पर बैठने और कर्बला का वाक़ेआ बयान करने को कोई हक़ नहीं है। मौलाना ने कहा कि दीन फ़रोश व ज़मीर फ़रोश ऐसे मोलवी नफ़रत के लायक़ हैं।

मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि अमरीका का वीज़ा पाने और डालरों की चमक ने अहलेबैत (अ०) के

नाम से कान्फ्रेंसों का इन्फ़ाद किया जा रहा है जिसमें अवाम कम और मोलवी थोक के भाव होते हैं ऐसी कान्फ्रेंसों का वीडियो कैसेट तैयार करके उसका फ़ायदा हासिल करने की कोशिश की जा रही है। चुनानचे ऐसे लोगों ने ही एक प्रेस कान्फ्रेंस के दौरान ईरान के ख़िलाफ़ की गई वोटिंग की हिमायत का बयान दिया है।

उन्होंने कहा कि हालात दिन बदिन ख़राब होते जा रहे हैं और रियासती हुकूमत भी अपने वादे भूल गई है और अफसरान टाल-मटोल और बहाने बाज़ी में लगे हैं। वक्फ़ मस्जिद जाफ़र हुसैन, वक्फ़ मस्जिद किश्वर जहाँ पर जहाँ ज़िला इन्तिज़ामिया के जरिये नमाज़ पढ़ने पर पाबन्दी लगा दी गई है वही साराएँ माली ख़ाँ में वाके वक्फ़ मस्जिद सरवर की ज़मीन पर पुल और सड़क तामीर कर दी गई है। जबकि हुसैनाबाद ट्रस्ट की ज़मीन पर काफी एहतेजाज किये जाने के बावजूद शराब के ठेकों की तजदीद कर दी गई। मौलाना ने कहा कि शाहनजफ़ की ज़मीन पर सहारागंज प्लाज़ा के

पार्किंग बनाने की प्लानिंग चल रही है इसके अलावा कौम के ख़िलाफ़ एक और बहुत बड़ी साज़िश की गई है जिसमें हुसैनाबाद ट्रस्ट के चेयरमैन की जानिब से मुख्यमंत्री को एक ख़त भेजा गया है जिसमें कहा गया है कि आसफी इमामबाड़ा और आसफी मस्जिद को टूरिस्ट डिपार्टमेंट के हवाले कर दिया जाए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने इस सिलसिले में अपने कानूनी सलाहकारों से राय ली है और वक्फ़ ऐक्ट में बदलाव किये जाने की तैयारी भी चल रही है। मौलाना ने कहा कि आज लाल क़िले और ताज महल टूरिस्ट डिपार्टमेंट के हवाले हैं मगर यहाँ बनी मस्जिदों में नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती और उन जगहों पर मज़हबी प्रोग्रामों पर भी पाबन्दी है। मौलाना ने कहा कि अब वक्फ़ नहीं दिया जायगा बल्कि एहतेजाज होगा। आपने एलान किया कि डी0एम0 की रिहाइशगाह पर शहर की अन्जुमनें और कौम के लोग गिरफ्तारी देंगे और यह तब तक चलेगा जब तक हमारी माँगें पूरी न हो जाएँ।

मक़तबतुज्ज़हरा का इफ़तेताह

मौलाना कल्बे जवाद ने किया

लखनऊ, 9 मई। नूरे हिदायत फाउण्डेशन की जानिब से ख़वातीन की दीनी तालीम व तरबियत के लिए एक मदरसे का इफ़तेताह आज काएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी साहब ने करते हुए अपनी तफ़रीर में कहा कि बहुत दिनों से यह ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि ख़वातीन की दीनी तालीम व तरबियत के लिए कोई ऐसी दर्सगाह बनायी जाय जिसमें बिना किसी उम्र की तफ़रीक़ के उनकी तरबियत की जा सके। उन्होंने कहा कि इस मदरसे की बुनियाद पहली जनवरी 1984 को जाकिरे शामे ग़रीबाँ सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमतमाब ने रखी थी जो कुछ दिनों तक तो चलता रहा लेकिन रहमतमाब की रेहलत के बाद बंद हो गया था जिसे नूरे हिदायत फाउण्डेशन ने एक बार फिर शुरू करने का फ़ैसला लेकर क़ाबिले मुबारकबाद काम किया है। उन्होंने अपनी तफ़रीर में खुशी का इज़हार करते हुए कहा कि मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि इस ज़माने की ज़रूरतों को सामने रखकर “गुफ़रानमाब इस्लामिक स्टडीज़ सेण्टर” का इफ़तेताह भी इन्शाअल्लाह 15 जमादिलऊला 1427हि0को गुफ़रानमाब इमामबाड़े में किया जाएगा। जिसमें कौम के बच्चों खासत तौर से अंग्रेज़ी स्कूलों के बच्चों की दीनी तरबियत का इन्तिज़ाम किया जाएगा।

इस मौक़े पर मौलाना सैय्यद सफ़दर हुसैन ज़ैदी

जौनपूरी ने अपनी खुशी का इज़हार करते हुए कहा कि मुझे उम्मीद है कि मक़तबतुज्ज़हरा न सिर्फ़ बच्चियों की दीनी मालूमत में इज़ाफ़ा करेगा बल्कि बुजुर्ग़ ख़वातीन भी इस मदरसे से मुस्तफ़ीज़ होंगी।

मौलाना सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी असीफ़ जायसी ने हाज़िरीन को ख़िताब करते हुए बताया कि आज चूँकि ग़्यारहवें इमाम हज़रत हसन असकरी (अ0) कि पैदाईश की तारीख़ है इसलिए आज के दिन ही इस मदरसे को न सिर्फ़ शुरू किया जा रहा है बल्कि आज ही से मदरसे में दाख़ले के लिए रजिस्ट्रेशन भी शुरू कर दिया गया है। मदरसे के क्लासेज़ मौलाना कल्बे जवाद साहब के शरीअत कदा 39, जौहरी मोहल्ला में जल्द शुरू हो जाएँगे जिसमें तरबियत यापता मुअल्लेमात तालीम के फ़राएज़ को अन्जाम देंगी। ख़ाहिशमन्द बच्चियाँ या उनके वालदैन नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमाब में सुबह 9 बजे से 12 बजे के बीच राबता काएम कर सकते हैं।

इस इफ़तेताही जलसे में इज़हारे ख़याल करने वालों में मौलाना एहतिशाम हसन गाज़ीपूरी, मौलाना अमीर हैदर, तालिब हुसैन ज़ैदी, सैय्यद इज़हार हुसैन नक़वी (मुन्तज़िम इमामबाड़ा गुफ़रानमाब) और दीगर उलमा व दानिश्वरों ने शिरकत की।